International Journal of Multidisciplinary ResearchAnd Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 5; May 2017; Page No. 292-293

मानवेन्द्र नाथ राय के मानववादी विचारों में मानसिक स्वतंत्रता महत्वपूर्ण पहलू

डॉ. ज्योति कुशवाह

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, के. आर. जी. स्वशासी महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

मानवेन्द्र नाथ राय का मानववाद प्रचलित विचारधाराओं की विशेषताओं को अपनाते हुये उनमें व्याप्त कमियों को उजागर करते हुए आगे बढ़ता है। उनके अनुसार ''उदारवादी परम्परा से प्रेरित लोकतांत्रिक समाजवादियों अथवा सामाजिक लोकतंत्रवादियों की धारणा थी कि सामाजिक संगठन स्वैच्छिक, वैयक्तिक प्रयत्नों का एक सामंजस्य है। एक मुक्त व्यक्ति अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाह किसी विवशता के कारण या सामूहिक अहं के कठोर देवता के सम्मुख श्रद्धांजलि के रूप में नहीं बल्कि अपनी स्वतंत्रता की चेतना से प्रसूत नैतिक आस्था अपनी स्वतंत्रता की चेतना से प्रसूत नैतिक आस्था के कारण करता है। इसके विपरीत, अधिनायकत्व की धारणा आधुनिक सभ्यता के सांस्कृतिक दायरे से पूर्णतया भिन्न है। यह उन सभी सामाजिक और नैतिक मूल्यों का निषेध है जो पवित्र रोमन साम्राज्य के लौकिक सर्वसत्ताबाद और ईसाई चर्च के झण्डे तले आध्यात्मिक जकड़बंदी के विरूद्व पुर्नजागरण कालीन मनुष्य के विद्रोह के बाद से मानवता की मुक्तिकामना को अभिव्यक्ति दे रहे है। इस कारण विष्व को दो शिविरों में बांट देने वाली इन विचारधाराओं के बीच कोई सामंजस्य संभव नहीं है। कोई एक विचारधारा निर्णायक बहुमत को अपने पक्ष में लेकर दूसरी को सदा के लिए समाप्त भी नहीं कर सकती है। दोनों ही दोषपूर्ण और समकालीन विश्व की आवश्यकताओं को पूरा करने में अक्षम है। अनुभव ने दोनों को ही अविश्वसनीय सिद्ध कर दिया है।

हॉब्स, लोक, रूसों उपयोगितावादी बैथम एवं व्यक्तिवादी मिल व स्पेन्सर ने भी मानव के महत्व एवं उपयोगिता को उत्तेजक रूप में स्पष्ट करने का प्रयास किया। लेकिन आगे चलकर ऐसा प्रतीत होने लगा कि मानव को केवल एक 'आर्थिक इकाई' के रूप में प्रतिस्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। परिणाम यह हुआ है कि मानव को महज एक आर्थिक प्राणी के रूप में देखते हुए उसकी आर्थिक योग्यताओं व क्षमताओं के विकास को उसके समग्र व्यक्तित्व के विकास का मूल आधार एवं प्रमाणमान लिया गया। कालांतर में यही व्यक्तिवाद पूँजीवाद और साम्राज्यवाद का पथ प्रदर्शक सिद्ध हुआ। एक जगह राय गांधीवाद को केवल–इसलिए नकारते है क्योंकि उन्हें लगता है कि इसमें पूँजीवाद को एक विकल्प के रूप में स्वीकार किया गया है। उनके अनुसार, ''गांधीवाद की सभी महत्वपूर्ण बातों से हमारा मतभेद है हम शुद्धतावादी नैतिकता स्वीकार नहीं करते और हम प्रौद्योगिकी और ज्ञान के फायदों से भी वंचित रहने के लिए तैयार नहीं है। हम पूँजीवाद और पूर्वपूंजीबादी सामाजिक व्यवस्था से बंधे नहीं है जैसा कि उन्हे गांधीवाद के विकल्प के रूप में स्वीकार किया जाता है। उन्होने भारतीय आध्यात्मिक परम्परा को लेकर भी गांधी एवं गांधीवाद का विरोध किया। उनका मानना था कि – '' तथा कथित भारतीय आध्यात्मिक परम्परा भारतीय सामाजिक जीवन को रूढ़िवादी बनाया, मानव की स्वतंत्रता में रूकावट पैदा की एवं भेदभाव पूर्ण समाज की स्थापना की।''

राय के पूर्ववर्ती जितने भी विचारको ने मानव मुक्ति के संबंध में अपने विचार दिये, मूलतः उनमें एक कमी सामान्य तौर पर देखने को मिलती है कि उन्होने इस पक्ष पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया कि मानव की मानसिक स्वतंत्रता उसकी अन्य स्वतंत्रताओं की नीव है। राय ने कहा कि बिना मानसिक स्वतंत्रता के राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रताओं को कोई अस्तित्व नहीं। अपनी मानववादी परम्परा के प्रति सच्ची निष्ठा के कारण उदारवाद ने व्यक्ति की स्वतंत्रता की उद्घोषणा की, लेकिन अहस्तक्षेप के आर्थिक सिद्धांत ने अपने राजनीतिक उपसिद्धांत के साथ, व्यक्ति को गलाकाट, प्रतिस्पर्धा के बीहडद्ध में एक असहाय अवस्था में ला दिया। उदारवाद के सकारात्मक पक्ष को राय ने केवल सराहा ही नहीं बल्कि उसे बचाने का भी प्रयास किया। उन्होंने लिखा कि ''मै व्यक्ति को सर्वोच्च महत्व देता हूँ, और उदारवाद के सकारात्मक इतिहास की रचना व्यक्ति करते है भीड़ नहीं, एवं राय का व्यक्ति (मानव) अकेला नहीं है, वह अपने आप में समग्रता लिए हुए है। वे ऐसे किसी व्यक्ति को मानव नहीं मानते जो मानसिक दृष्टि से मानव न होकर केवल जीव शास्त्रीय दृष्टि से मानव हो इस विचार को उन्होंने इस प्रकार स्पष्ट किया कि– ''व्यक्ति को अपने आप को अपने भाग्य का निर्माता बनने से पूर्व समूह से अलग अपनी पहचान बनानी होगी।''

सामान्यतः सभी उदारवादी एवं मानववादी चिंतकों ने मानव एवं उसकी स्वतंत्रता की रक्षा हेतु ही प्रयास किये है, लेकिन मानसिक स्वतंत्रता पर अधिक जोर देने के कारण राय अपने पूर्ववर्ती एवं समकालीन विचारकों से अलग एवं महत्वपूर्ण हो जाते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. फिलिप स्प्रैट एवं एम.एम.राय, साम्यवाद के पार अनुवाद– चंद्रोदय दीक्षित, पृष्ठ 29

2. दिरैडिकल ह्यूमैनिस्ट–69 (11), फरवरी 2006, पृष्ठ 3
3. एम.एन.राय,ओरियेन्टेशन, पृष्ठ 102
4. एम.एन.राय, न्यू ओरियेन्टेशन, पृष्ठ 17
5. कुमकुम कपूर, एम.एन.राय, नवोग्र मानववाद और मार्क्स
6. वी.एम.तारकुण्डे– रैडिकल ह्यूमैनिज्म